किसानों की आवाज का दस्तावेज

सीमित वितरण हेतु

cecoedecon

आवाज...

वर्ष-7 अंक-15 अप्रैल 2018 - मार्च 2019

किसान सेवा समिति महासंघ

हमारा संकल्प
भूख, गरीबी, असमानता,शोषण
से मुक्त विश्व का निर्माण

ClimateNet
44
CECOEDECON
Centre for Community Economics
and Development Consultants Society
45

आम सभा

भीतर के पन्नों में

1. दायित्व बोध
2. ऐसे थे शरद जोशी
3. समर्पण: शून्य से शिखर तक
4. ऐसे थे पूज्य जोशी जी
5. आत्मनिर्भरता का आधार: स्वदेशी–हमारा असली धन
6. विश्व व्यापार संगठन–पृष्ठभूमि
7. भारत की प्रथम महिला अध्यापिका
8. किसान सम्मेलन–शीतला
9. पंचम नदी महोत्सव
10. सामाजिक बदलाव के लिए संघर्ष
11. अन्न देवता की, जनता के नाम पुकार
12. कृषि मन्त्री महोदय से संवाद
13. मौसम यन्त्र उपयोगिता
14. सेवा भावना
15. जलवायु परिवर्तन– कार्यशाला
16. विधायक महोदय: सम्मान समारोह एवं संवाद
17. विधायक महोदय संवाद एवं स्वागत (मालपुरा)
18. विधायक महोदय सम्मान समारोह व संवाद कार्यक्रम (निवाई)
19. मेरी कलम पूजती
20. शीर्ष संस्थाओं का संस्थागत विकास पर क्षमतावर्धन
21. किसान सेवा समिति शाहबाद के सार्थक प्रयास
22. किसान को आत्मनिर्भर बनाने को प्रयासरत कृषि विज्ञान केन्द्र

किसान सेवा समिति महासंघ

(स्वराज कैम्पस), एफ–159–160
सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थागत
क्षेत्र, जयपुर–302022

द्वारा प्रकाशित

सम्पादकीय .....

दायित्व बोध

राजनैतिक अदूरदर्शिता, सत्ता की अन्धी दौड़ और सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रतिबद्धता की कमी के चलते वर्तमान भारत के हालात देखकर मन विचलित होता है, क्या यही भारत है? जिसकी एकता, अखण्डता, स्वातन्त्रय एवं सुख समृद्धि के लिए हमारे असंख्य महापुरूषों ने जीवन को होम दिया था। पर आज भ्रष्टाचार, बढ़ते अपराध, साम्प्रदायिकता, धर्म, जाति के नाम पर समाज में बढ़ती दूरियाँ, ग्राम किसान मज़दूर व वंचित वर्ग की घोर उपेक्षा, घोटालों पर घोटाले की तस्वीर उभर रही है, यह भयावह है।

सकारात्मक दृष्टिकोण से अनेक भारतीय प्रतिभाओं ने विश्व के विभिन्न देशों में शैक्षणिक, सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में व्यापक पहचान बनाई है एवं भारतीय जन मानस को गौरवान्वित किया है। फ़ोर्ब्स की सूची में 100 से अधिक भारतीय अरबपतियों के नाम है। दूसरी ओर भारत के करीब 40 करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे गुज़र बसर कर रहे हैं। भ्रष्टाचार मुक्त एवं रोज़गार युक्त भारत के नारे मात्र कागज़ों पर सिमट कर रह गये हैं। ग्रामों में सामाजिक भेदभाव एवं एकता का ताना–बाना चरमरा रहा है।

दरअसल पश्चिम के विकास मॉडल पर किया गया विकास इसका जिम्मेदार है। जो आजादी के 70 साल बाद भी हर भारतीय को दो जून रोटी उपलब्ध न करवा सका व साथ ही शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में बाज़ार केन्द्रित विकास के मॉडल से समाज का अन्तिम व्यक्ति (मज़दूर, किसान, वंचित वर्ग, महिला) नदारद है। जबकि समग्र विकास वह है जो समाज के हर गरीब वर्ग को गरिमामय जीने के लिये वे सभी संसाधन उपलब्ध करवाये, जो उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हों।

इसके लिए विकास का स्वदेशी मॉडल हो एवं विकास का मॉडल प्रत्येक व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास का हो, न कि सिर्फ़ जी.डी.पी. पर। देश में आवश्यकता है नैतिकता एवं सामाजिक़ कर्त्तव्य बोध की। साम्प्रदायिकता, जातिवाद से ऊपर उठकर हर समाज़ वर्ग में आपसी सद्भाव, सम्मान एवं परस्पर विश्वास कायम हो। इस दिशा में सकारात्मक पहल को गति देना सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण बिन्दु है। साथ ही प्रत्येक नागरिक को संविधान के अनुरूप अवसर एवं न्याय की समानता का अधिकार मिले। सी.बी.आई., आई.बी. आदि स्वायत्तशासी संस्थाओं को सत्ताधीश अपने राजनैतिक हित के लिये दुरूपयोग न करें।

भ्रष्टाचार एवं घोटोले बाज़ो ने देश की प्रगति को कम किया है, उन पर सख्त कार्यवाही हो। दूसरा पक्ष है ऐसे समाज के रचना की ओर कदम सतत् चलते रहे, जिसमें प्रकृति संरक्षण, संवर्धन एवं प्रकृति के साथ साहचर्य का भाव विकसित होता रहे। अपने स्वार्थ एवं विकास के नाम पर प्रकृति के शोषण की प्रवृत्ति पर अंकुश लगे। सारांशत: राजनेताओं का कुर्सी की अन्धी दौड़ एवं राजनैतिक स्वार्थों के ऊपर उठकर देश व समाज़ के अन्तिम व्यक्ति का उत्थान ही मुख्य एजेन्डा हो तभी भारत पुन: विश्व के वैभव शिखर हासिल कर सकता है, इसमें अतिश्योक्ति नहीं है।

संरक्षक व मार्गदर्शन :
श्रीमती मंजू जोशी

संपादक :
भगवान सहाय ढाधीच

ग्राफिक्स :
रामचन्द्र शर्मा एवं भँवरलाल

ऐसे थे शरद जोशी

पी.एल. मीमरौठ, एडवोकेट
दलित अधिकार केन्द्र जयपुर

श्री शरद जोशी से मेरी पहली मुलाकात 2000 में डरबन कॉन्फ्रेस के दौरान हुई। डरबन कॉन्फ्रेस में नस्लवाद, भेदभाव पर विश्व सम्मेलन हुआ था जिसमें पहली बार भारत में जातिगत भेदभाव के मुद्दे को दुनियाभर के देशों, यूरोपियन यूनियन और अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों के सामने प्रभावी ढंग से उठाया गया था। उस समय राजस्थान की ओर से मैं स्वंय, सतीश कुमार जी एडवोकेट, अजमेर से सिस्टर केरल, श्रीमती ममता भूपेश (जो वर्तमान में राजस्थान सरकार में मंत्री हैं), श्री नरेन्द्र भारद्वाज, श्रीमती शिवली कुमार डरबन कॉन्फ्रेस में शामिल थे। उस समय की चर्चा में श्री शरद जोशी जी ने इस बात पर जोर दिया कि राजस्थान में दलित आन्दोलन को खड़ा किया जाये क्योंकि यहां छुआछूत जातिगत भेदभाव ज्यादा है। इसके लिए उन्होने मुझे आमन्त्रित किया और उनके सगंठन सीकोईडीकोन की तरफ से पूरा–पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

राजस्थान में दलित आन्दोलन प्रतिस्थापित करने में जोशी जी का योगदान

चूंकि मैं उन दिनों दिल्ली में कैट (केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण) में प्रेक्टिस करता था और उसके साथ ही राजस्थान और अन्य प्रान्तों के दलितों पर होने वाले अत्याचार और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाता रहता था। जोशी जी के आमन्त्रण पर मैंने स्थाई रूप से जयपुर में आने का फैसला कर राजस्थान में दलित आन्दोलन को मजबूत करने का निर्णय लिया। इस सिलसिले में दलित आन्दोलन को सुचारू रूप से राजस्थान में चलाने के लिए जोशी जी ने पूरा सहयोग देने का वादा किया था जिसको उन्होंने पूरी तरह से शत–प्रतिशत निभाया।

संस्था का नामांकरन दलित मानव अधिकार केन्द्र रखा गया और इसके संचालन के लिए पांच सदस्यीय कोर कमेटी का गठन किया गया। कोर कमेटी का संयोजक मुझे नियुक्त किया गया तथा अन्य सदस्य सुश्री भंवरी बाई अजमेर, श्रीमती शिवली कुमार, श्री लक्ष्मी नारायण जी जयपुर, श्री चेतन मेघवाल फलोदी थे। संस्था के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए पूरी साज सज्जा के साथ कार्यालय उपलब्ध कराया गया तथा 6 व्यक्तियों का स्टाफ भी नियमित रूप से दिया गया। फील्ड में आने–जाने के लिए वाहन की व्यवस्था भी की गई जिसके परिणाम स्वरूप बहुत ही कम समय में राजस्थान में दलित अन्दोलन तेजी के साथ उभरने लगा तथा सरकार तक दलितों की आवाज पहुँचने लगी।

31 दिसम्बर 2000 की रात्री को सीकोईडीकोन के सभी कार्यकर्ता व टीम मैम्बर व सहयोगी सदस्यों से कि बार्षिक बैठक सीकोईडीकोन के तत्कालीन प्रधान कार्यालय शीलकी डूंगरी, चाकसू में आयोजित की गई थी जिसमें मुझे व मेरी पत्नी को

आमन्त्रित किया था। उस बैठक में जोशी जी ने पूरी सभा के सामने मेरा परिचय देते हुए कहा कि मैं सीकोईडीकोन के सहयोग से दलितों के लिए राजस्थान में काम करूंगा इसलिए सभी लोगों से सहयोग देने की अपील की। इसके साथ ही साथ जोशी जी ने उस समय एक बहुत ही क्रान्तिकारी फैसला लेते हुए घोषणा की कि सीकोईडीकोन के रसोई घर में सप्ताह में एक बार यहां पर काम करने वाले सफाई कर्मी पति–पत्नि खाना बनायेंगे और परोसेंगे भी। इस घोषणा से सभी लोग दंग रह गये, शायद कुछ को ये फैसला पसंद न आया हो परन्तु जोशी जी के विशाल व्यक्तित्व के सामने वे कुछ न कह पाये। मुझे पता नहीं कि ये फैसला कब तक जारी रहा परन्तु ये बात स्पष्ट है की जोशी जी दलितों व दबे कुचले लोगों के सच्चे हमदर्द थे।

फागी तहसील के चकवाड़ा गांव के दलितों को सार्वजनिक तालाब के पक्के घाटों पर दलितों व महिलाओं का नहाना वर्जित था। इसी परम्परा को सन् 2001 में गांव चकवाड़ा के ही बाबू लाल व दूसरे राधेश्याम बैरवा ने तोड़ दिया और तालाब के पक्के घाट पर नहा लिए। इससे कुपित होकर पूरे गांव के सवर्ण समाज के लोगों ने दलितों का सामाजिक बहिष्कार कर 51000 रूपये का जुर्माना कर दिया गया। सवर्णों के इस फैसले से क्षेत्र के दलितों में रोष पैदा हो गया जब उनका सामाजिक बहिष्कार नहीं हटाया तो दलितों ने परेशान होकर एफ.आई.आर दर्ज करा दी। इसके बाद दलित अधिकार केन्द्र और सीकोईडीकोन ने चाकसू से लेकर चकवाड़ा तक सद्भावना रैली आयोजित की जिसमें अधिकतर संख्या में उच्च वर्गीय मानवतावादी कार्यकर्ता व महिलायें शामिल थी। इस पद यात्रा का विरोध करने हेतु क्षेत्र के सभी दबंग वर्ग लामबन्द होकर पद यात्रा पर आक्रमण करने की योजना बनाई जिसमें यह प्रचार–प्रसार किया गया कि दलित जबरन मंदिर में प्रवेश कर तालाब को अपवित्र करना चाहते हैं। पदयात्रा चाकसू से माधोराजपुरा तक पहुँच कर रात्री विश्राम के लिए रूकी तो पता चला की पदयात्रा का विरोध करने के लिए 5–10 हजार लोग मय डंडे–लाठी व हथियारों सहित एकत्रित हो गये हैं। इस पर प्रशासन ने भी भारी मात्रा में पुलिस बल व अर्द्व सैनिक बलों को पद यात्रियों की सुरक्षा की दृष्टि से मौके पर लगाया गया। इस पर पदयात्रा को माधोराजपुरा में ही समाप्त कर दिया गया उपद्रवियों की उग्र भीड़ ने पुलिस व अर्द्व सैनिक बल पर हमला कर दिया। पुलिस को उग्र भीड़ को काबू में करने के लिए गोली चलानी पड़ी जिसमें कई लोग घायल हुए परन्तु कोई हताहत नहीं हुआ।

गोलीकाण्ड की खबर सुनकर जोशी जी बहुत विचलित और चिंतित हुए मैंने उन्हें ढांढस देते हुए कहा कि आपके इस प्रयास से क्षेत्र के ही नही पूरे राज्य के दलितों में चेतना पैदा होगी और हुआ भी ऐसा ही। चकवाड़ा काण्ड को लेकर पूरे राजस्थान के दलितों में स्वाभिमान की भावना जागी है वे अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं।

राजस्थान में जितने भी एनजीओ हैं उनमें से कुछ की राय जोशी जी से मेल नहीं खाती थी परन्तु इसके बाबजूद भी वे सभी के साथ सह हृदयता, शालीनता, और मिलनसारिता का व्यवहार करते थे, जोशी जी ने हमेशा छोटी संस्थाओं व कार्यताओं को प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दिया है। वे छोटे से छोटे कार्यकर्ता का ध्यान रखते थे।

सीकोईडीकोन जैसे वृहद (बडे) संगठन के कर्ताधर्ता होते हुए भी उनमें तनिक भी अभिमान नहीं था और सबकी बात बडे ध्यान से सुनते थे और मार्गदर्शन भी करते थे।

श्री शरद जोशी राजस्थान में तो एनजीओ जगत में सबसे अधिक प्रभावी व्यक्तित्व के धनी थे और उनका अन्य सभी स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ बहुत अच्छा समन्वय था इसके साथ ही साथ बहुत राष्ट्रीय स्तर के सभी प्रमुख स्वयं सेवी सस्थाओं के कार्यक्रमों में अपना दखल रखते थे। उन्होंने अपने कठिन परिश्रम व दूरदर्शिता के कारण सीकोईडीकोन का बहुत बडा विस्तार किया है।

मुझे 2002 में जोशी जी के साथ प्रथम वर्ल्ड सोशियल फोरम में शामिल होने के लिए ब्राजील जाने का मौका मिला वहां मैंने जोशी जी की चमक व प्रभाव देखा और मैं बहुत प्रभावित हुआ। वैश्विक स्तर पर एनजीओ संस्थाओं तथा दानदाताओं की बैठको में जोशी जी ने धारा प्रवाह अंग्रेजी में भारत की स्थिति का चित्रण किया। इसके विपरीत वे राजस्थान और भारत में जोशी ने अपने आपको किसी भी प्रोग्राम में आगे आकर अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयास नहीं किया। मुझे याद है कि दलितों के लिए आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में हमेशा ही वे पर्देके पीछे रहते थे और कार्यकर्ताओं को आगे करते थे।

दिवंगत श्राद्धेय श्री शरद जोशी की दलित आन्दोलन को राजस्थान में दृढ़ता लाने में जो योगदान, सहयोग और मार्गदर्शन दिया है उसके प्रति राजस्थान का दलित समुदाय सदैव उनका ऋणी रहेगा और चिरकाल तक उन्हें याद रखेगा, ऐसे महा मानव को हम हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

समर्पण : शून्य से शिखर तक

माननीय शरद जी जोशी एक व्यक्ति नहीं विचार थे, उन्होंने सामाजिक जीवन में कार्य करते–करते समाज के उस आखिरी व्यक्ति की पीड़ा–वेदना को महसूस किया, पहचाना, जिसके चलते वह गरीबी–भुखमरी की बदहाल जिन्दगी जीने को मज़बूर था। इसी वजह से वे जीवन पर्यन्त किसानों, महिलाओं, वंचित वर्ग एवं दबे–कुचले लोगों के अधिकारों के लिये प्रयासरत रहे। आपने अपनी कर्मठता, लगन एवं आम समुदाय के विकास के प्रति समर्पण भाव से सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाया।

एक ओर वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न मंचों पर गरीब किसान, महिला, वंचित वर्ग के मुद्दों पर एक सशक्त आवाज बनकर उभरे। सिकोईडिकोन संस्था की लोकप्रियता एवं पहचान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा कर भी आप ग्राम की चौपाल को कभी नहीं भूले। एक ओर माननीय जोशी जी को किसी गरीब किसान, आदिवासी के घर खाट पर बैठ कर उसके परिवार एवं ग्राम विकास सम्बन्धी चर्चा करते देखा जा सकता था, तो दूसरी ओर डॉ. बलराम जाखड़– पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री एवं लोकसभा अध्यक्ष, श्री शिवराज सिंह चौहान, पूर्व मुख्यमंत्री (मध्य प्रदेश), श्री के. सी. पंत– योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष, श्री कमल नाथ– पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं मुख्यमंत्री (मध्य प्रदेश), श्री अनिल माधव दवे– पूर्व केन्द्रीय पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री जैसे नेताओं एवं माननीय श्री गोविन्दाचार्य, श्री सुरेश सोनी, श्री देवेन्द्र शर्मा, श्री अनुपम मिश्र (प्रख्यात पर्यावरणविद्), श्री मुरलीधर राव, सुश्री वन्दना शिवा (प्रख्यात पर्यावरणविद्) जैसे चिन्तकों के साथ विभिन्न मुद्दों पर नीतिगत चर्चा करते देखा जा सकता था। जस्टिस माननीय श्री विनोद शंकर दवे, जस्टिस श्री पाना चन्द जैन, श्री पी. एल. मिमरोठ जैसी हस्तियों का मार्गदर्शन एवं सहयोग इन्हें सतत् मिलता रहा व आज भी मिल रहा है।

गरीब, किसानों, महिलाओं, दलितों, बुद्धिजीवियों, जनसंगठनों एवं विभिन्न दलों के राजनेताओं को एक मन्च पर लाकर विभिन्न मुद्दों पर सार्थक चर्चा करवाकर परिणाम तक पहुंचाना उन जैसे व्यक्तित्व वाला ही कर सकता था। ऐसे अदभुत संगठनकर्ता थे माननीय श्री शरद जोशी। उनका समुदायों व सरकारों से भी अनेक मुद्दों पर मतभेद रहे। समुदाय व सरकारी एजेन्सीज़ ने उनका अनेक मुद्दों पर प्रबल विरोध किया, पर वे परिणामों की परवाह किये बगैर दृढ़ निश्चय, निर्भिकता के धनी

जोशी जी न पीछे हटे न झुके, लक्ष्य प्राप्ति की ओर सतत चलते रहे। (मोन्सेन्टो, भू अधिग्रहण बिल, दलित अत्याचार, महिला उत्पीड़न के मुद्दे) परन्तु उनके मार्गदर्शन में संस्था एवं जनसंगठनों द्वारा मुद्दे उठाने व विरोध करने का तरीका लोकतान्त्रिक रहा।

सामाजिक समरसता के वे घोर समर्थक थे, उन पर वंचित वर्ग के पक्षधर होने के आरोप लगे पर वे इससे कभी विचलित नहीं हुये। राज्य में अनेक किसान संगठन कार्य कर रहे हैं, परन्तु वे संगठन राजनीति की परिधि से बाहर निकलने का साहस नहीं जुटा पाये। परन्तु उन्होंने गैर राजनैतिक किसान संगठन आम किसान को साथ लेकर खड़ा किया, जिसने किसानों के विभिन्न मुद्दों पर विद्रोही तेवर भी अपनाये व उनकी आवाज प्रभावी ढ़ंग से उठायी, जिससे अनेक मुद्दों एवं समझौता से सरकार को कदम पीछे खिंचने पड़े। अनेक मुद्दों पर सरकार के साथ सहयोगी की भूमिका भी अदा की।

वह 2000 के दशक का वह दौर था, जब खेती–किसानों के विभिन्न राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय मुद्दों पर अधिकांश सांसद एवं विधायकों एवं विभिन्न जनसंगठनों एवं किसान संगठनों को व्यापक समझ नही बन रही थी। तब उस दौर में माननीय शरद जोशी कृषि क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन के वाहक बने एवं राष्ट्र एवं राज्य स्तर पर किसान आन्दोलनों को नई दिशा दी। वैसे तो उनके मार्गदर्शन में सैंकड़ो किसान आन्दोलन किसान जागरूकता अभियान चले पर कुछ का उल्लेख करना प्रेरणास्पद रहेगा।

2004 में विश्व व्यापार संगठन के दुष्परिणामों एवं कृषि पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर किसान सेवा समिति महासंघ ने राज्य

के करीब 17 जिलो में विभिन्न जन संगठनों एवं किसान संगठनों को साथ लेकर जन– चेतना अभियान चलाया इससे एक ओर सरकार को आगाह किया व इस सम्बन्ध में पंचायत राज प्रतिनिधियों एवं लाखों किसानों से हस्ताक्षरित ज्ञापन तत्कालीन वाणिज्य मन्त्री मा. कमलनाथ को सौंपकर आग्रह किया कि सरकार W.T.O. के हांगकांग शिखर सम्मेलन में ऐसा कोई समझौता नहीं करें जो किसान–हितों के प्रतिकूल हो व हांगकांग की सड़कों पर किसानों के जबरदस्त प्रदर्शन के पीछे भी माननीय जोशी जी का रणनीतिक सोच था।

जयपुर में भारी बारिश के बीच किसानों की जबरदस्त रैली निकाल राज्यपाल महोदय को ज्ञापन देना W.T.O. को लेकर माधोराजपुरा (जयपुर) में विशाल किसान सम्मेलन आयोजित कर जिसमें सुप्रसिद्ध चिन्तक माननीय गोविन्दाचार्य जी, पर्यावरणविद वन्दना शिवा जी, श्री मुरलीधर राव जैसे हस्तियों की भागीदारी रही में पर्देके पीछे से मा. शरद जी का स्पष्ट सन्देश था कि इस मुद्दे को लेकर कितने गम्भीर है।

राज्य सरकार एवं मोन्सेन्टों के करार पर पंचायत राज प्रतिनिधियों को साथ लेकर ग्राम की चौपाल से विधानसभा तक प्रदर्शन कर (सभी विधायकों, सांसदों से संवाद कर) सरकार को इस समझोते से पीछे हटने को मजबूर किया।

राजस्थान को जी. एम. फ्री घोषित करने व जैविक खेती प्रोत्साहन हेतु जैविक बाजार एवं जैविक कृषि जोन स्थापना पर सरकार से आग्रह।

जलवायु परिवर्तन का खेती पर पड़ रहे कुप्रभावों को देखते हुए राज्य में पृथक जलवायु परिवर्तन सेल खोलने के साथ ग्रासरूट पर अभियान चलाना। चरागाह संरक्षण, फसल बीमा योजना, प्राकृतिक आपदा पर कृषि मुआवजा, समर्थन मूल्य खरीद केन्द्र आदि विभिन्न मुद्दों पर किसान सेवा समिति प्रतिनिधियों से सजीव सम्पर्क में रहे व समय–समय पर मार्गदर्शन देते रहे।

भू–अवाप्ति अधिनियम 2014 को निरस्त करवाने हेतु विभिन्न किसान संगठनों (भारतीय किसान संघ, किसान सभा) को साथ लेकर विधानसभा तक रैली एवं प्रदर्शन एवं पत्रकार वाताएं की, इस पर भी सरकार को निर्णय बदलना पड़ा।

किसान सेवा समिति ने 2001 में कृषि उत्पाद के समर्थन मूल्य लागू करने हेतु चाकसू (जयपुर) व निवाई (टोंक) में हजारों किसानों के साथ प्रदर्शन किया व सरकार की आँखें खुली व समर्थन मूल्य तय करने के साथ ही बिक्री की व्यवस्था भी करनी पड़ी। ऐसे विशाल आन्दोलनों को भी जोशी जी का वरदहस्त रहा।

जोशी जी के मार्गदर्शन में मोन्सेन्टों एवं भू अधिग्रहण बिल आदि पर समझौतों एवं नीतियों का भी K.S.S. ने खुलकर विरोध किया व इन समझौतों से सरकार को पीछे हटना पड़ा।

इसके अलावा आपने देश–विदेश के सम–सामयिक एवं ज्वलन्त मुद्दों (जलवायु परिवर्तन–सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य – सतत विकास लक्ष्य आदि पर भी पैनी नजर रखी व उस परिस्थिति के अनुसार ही संस्था की कार्य योजना तैयार कर उन समझौतों से समुदाय पर पड़ रहे प्रभावों से समुदाय को आगाह किया, तो केन्द्र सरकार को भी इन मुद्दों पर सचेत करते रहे। शिष्टाचार–सदाचार उनके जीवन का अंग रहा।

प्रतिष्ठा एवं ख्याति से कोसों दूर रहने वाला वह प्रखर व्यक्तित्व हमारे बीच नहीं है। पर जोशी जी नम्रता, सादगी कार्य के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता समाज क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं का सतत् कर्त्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा देती रहेगी।

– भगवान दाधीच

प्रेरक प्रसंग

जब भगवान बुद्ध अपना शरीर छोड रहे थे कुशीनगर में भगवान बुद्ध मृत्यु शैया पर लेटे थे तब आपने अपने प्रिय शिष्य आनन्द को न देखकर उन्होंने भिक्षुकों से पूछा कि आनन्द कहाँ है? भिक्षुकों ने कहा, भगवान आनन्द बाहर खड़ा रो रहा है, उन्होंने कहा, उसे बुलाओ।

वह भगवान के सम्मुख आया, भगवान ने कहा, आनन्द क्यों रोते हो? आनन्द ने कहा संसार का दीपक बुझ रहा है। संसार अन्धकार से आच्छन्न होने वाला है। आपकी अनुपस्थिति में हमें उपदेश देने वाला, हमको संसार चक्र से उबारने वाला कौन होगा।

भगवान बुद्ध ने कहा आनन्द तुम हमारी उस शिक्षा को कैसे भूल गये, क्या हमने तुम्हें बार–बार यह नहीं सिखाया कि जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है; हमने तुम्हें क्या यह नहीं बताया कि तुम अपने पैरों पर स्वयं खड़े हो, स्वयं अपने दीपक बनो, समाज एवं राष्ट्र का कार्य करो। किसी दूसरे दीपक का सहारा मत लो।

हमारे महानिर्वाण के अनन्तर हमारे निर्माण की शिक्षा ही तुम्हारे लिये दीपक का कार्य करेगी; जाओ रोओ मत, यह रोने का समय नहीं है, निर्वाण के लिये सदा प्रयत्नशील हो, देश व समाज के दीन दु:खी की अनवरत सेवा करते रहना, व भगवान ने आंखे मूंद ली।

ऐसे थे पूज्य जोशी जी

मैं एक साधारण किसान परिवार एवं छोटे से ग्राम का रहने वाला हूँ। समाज कार्यों में बचपन से ही रूचि रही है। 2000 में मैं ग्राम विकास समिति– तुम्बीपुरा से जुड़ा तो मुझे माननीय जोशी जी से मिलने व बातचीत करने का अवसर मिला।

कार्य करते–करते समय के साथ मेरे संस्था से सम्बन्ध परिवार की तरह होने लगे। मुझे संस्था के कार्यक्रमों में बुलाया जाता व ग्रामों में संगठन की जो जिम्मेदारी मुझे दी गयी मैं पूरी तरह निभाने का प्रयास करता। फिर मा. जोशी जी ने 2004 में मुझे बुलाकर कहा चौधरी साहब आपको किसानों के राज्यस्तरीय संगठन के अध्यक्ष का दायित्व लेना है व राज्य स्तर पर किसान संगठन खड़ा करना है।

मेरी पारिवारिक जिम्मेदारी भी बहुत थी परन्तु माननीय जोशी जी का व्यक्तित्व इतना विशाल था कि मैं चाहकर भी उन्हें ना नहीं कर सका।

फिर मुझे जोशी जी ने विश्व व्यापार संगठन के दुष्परिणामों को लेकर समुदाय व जन संगठनों में जागृति लाने हेतु 19 जिलों में आम जन से सीधा संवाद एवं सभाएं करने को कहा, मेरे सहयोगी की भूमिका में हमारे संगठन, किसान सेवा समिति महासंघ सचिव भगवान दाधीच भी मेरे साथ रहे। हम 19 जिलों में गये हमारे संगठन की बड़ी पहचान हुयी। फिर मुझे विश्व व्यापार संगठन, हांगकांग के सम्मेलन में अपने साथ ले गये।

मेरी विदेश यात्रा में साहब ने हमारी छोटी–मोटी बातों का ख्याल रखा, भोजन, पानी, सोने की चिन्ता रखी। फिर जो हांगकांग की सड़कों पर किसानों का वृहद आन्दोलन हुआ, उससे विकसित देश एवं विदेशी मीडिया भी खासा प्रभावित रहा।

कुल मिलाकर मेरे जैसे साधारण व्यक्ति को छोटे से ग्राम से उठाकर अनेक मुद्दों पर समझ बढ़ाकर मुझे जो राज्य स्तर पर सम्मान दिया वो मेरे जैसे लोगों के लिये सपना ही था। यह मा. जोशी जी के मार्गदर्शन एवं स्नेह से ही सम्भव हो सका।

– बद्री नारायण जाट

सिकोईडिकोन की स्थापना के समय से ही सम्माननीय जोशी जी का अपने कार्यकर्ताओं (कर्मचारियों) से पारिवारिक एवं भावनात्मक सम्बन्ध रहे। उनके साथ हिलमिलकर खाना बनाना, साथ उठना–बैठना दिनचर्या का अंग था।

वे कार्य व समाज के बदलते परिवेश में इतने सज़ग थे; इतने दूरदर्शी थे, उन्होंने 1982 के बाद से ही बंजर भूमि को विकसित करने, मेडबन्दी एनिकट का कार्य जनता को साथ लेकर आगे बढ़ाया तो पर्यावरण बचाने के लिये सघन वृक्षारोपण के कार्य में निरन्तर जुटे रहे। उनका संस्था के कर्मचारियों पर बहुत विश्वास था, उनके सम्मान से कभी उन्होंने समझौता नहीं किया। इसके लिये दो उदाहरण दे रहा हूं।

मैं शीतला में कार्यरत था। 1990 में काठावाला के तत्कालीन सरपंच महोदय ने मनमर्जी से संस्था के कार्यकर्ता पर दबाव बनाकर मेडबन्दी करवा दी, स्वयं के आधार पर कार्य करवा दिया। हमने इसको सही नहीं माना तो सम्माननीय जोशी जी गांव में गये एवं आम चौपाल पर बात कर व हमारी राय लेकर भुगतान के लिये ना कर दिया, उनका स्पष्ट मत था कि बिना चौपाल व बिना प्रभारी की सहमति के कार्य करवाना संस्था की नीतियों के खिलाफ़ है।

चाकसू क्षेत्र के ग्राम रसूलपुरा में संस्था का एक कर्मचारी मेडबन्दी का भुगतान करने गया था। एक व्यक्ति ने हमारे कर्मचारी से अभद्र व्यवहार किया, जोशी जी को पता लगते ही गांव में पहुंचे व गांव वालों को इकट्ठा कर कहा क्या किया जाये? गांव वालों ने साहब के निर्णय पर अपनी सहमति की मुहर लगवा दी। उस व्यक्ति को गलती का अहसास हुआ एवं अपनी गलती स्वीकार की। इस दौरान जोशी जी न गुस्से में आये न कोई टीका टिप्पणी की। ऐसे आदर्श संरक्षक थे अपने कार्यकर्ताओं के लिये माननीय जोशी जी।

– राम सहाय शर्मा

सन् 2000 में मैं ग्राम विकास समिति सदरपुरा (मालपुरा) से जुड़ा, सिकोईडिकोन संस्था द्वारा जल बचाने, प्राकृतिक संसाधन एवं पर्यावरण संरक्षण के कार्यों से प्रभावित हो मैं गहराई से जुड़ता गया व इसी दौरान मुझे श्री कल्याण किसान सेवा समिति, मालपुरा का अध्यक्ष बनाया गया। इससे श्रीमान् शरद जी जोशी से मेरा सीधा सम्पर्क हो गया, व मेरे से व किसान सेवा समिति के साथियों से मालपुरा क्षेत्र के मुद्दों एवं समस्याओं पर चर्चा करते रहते 2001 में किसान सेवा समिति की मीटिंग में जोशी जी पधारे, जब मीटिंग में चरागाह, पेयजल, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे मुद्दे निकलकर आये।

जोशी जी को आने वाले समय की बहुत ज्यादा चिन्ता थी, उन्होंने मालपुरा क्षेत्र में सिन्दोलिया माता जी क्षेत्र में एक पर्यावरण यज्ञ का विचार रखा। हम लोगों के लिये नया अनुभव था, हमने हां भर दी। उस समय के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल महोदय माननीय अंशुमान सिंह जी, स्थानीय विधायक मा. सुरेन्द्र व्यास को सादर आमन्त्रित किया गया। वहां करीब 10000 लोगों की सहभागिता रही, हवन हुऐ, कल्पवृक्ष लगाया गया, हजारों पौधे लगाये गये चरागाह भूमि में, जो आज बढ़कर विशाल वृक्ष बन चुके हैं।

पर्यावरण संरक्षण की चेतना जगाने हेतु जोशी जी का यह एक व्यवहारिक प्रयोग था। आज भी लोग कल्पवृक्ष की पूजा करते हैं, पास में भगवान शंकर, पंचमुखी हनुमान मन्दिर (भोपलाप मन्दिर) है। यहां भी तीर्थ यात्रियों का जमघट लगा रहता है। पर्यावरण यज्ञ से ग्रामीण सीखकर आस–पास के अनेक ग्रामीणों ने चरागाह में वृक्षारोपण अभियान शुरू किया था, वह आज भी जारी है।

2001 में ही बिसलपुर प्रोजेक्ट पर कार्य चल रहा था। सम्माननीय जोशी मालपुरा क्षेत्र में पेयजल समस्या को लेकर चिन्तित थे। उन्होंने हमें कहा पंचायत राज प्रतिनिधियों – सरपंच, पंचायत समिति सदस्य, जिला परिषद सदस्यों के साथ मीटिंग कर साझा रणनीति तैयार करनी है। तब किसान सेवा समिति, मालपुरा एवं जन– प्रतिनिधियों की मीटिंग हुयी। स्वयं जोशी जी के मार्गदर्शन में बिसलपुर परियोजना पेयजल, मालपुरा क्षेत्र में जल्दी आये, ऐसी रूपरेखा बनी। सबने मिलकर सम्बन्धित अधिकारियों से बात की, क्षेत्र की पेयजल समस्या व फ्लोराइड का तथ्यात्मक रूप पेश किया। आज पानी सुचारू आ रहा है, ऐसे दूरदर्शी थे श्रीमान् जोशी जी

– कैलाश गुर्जर, मालपुरा

मैं जयपुर जिले के ग्राम चन्दलाई का रहने वाला हूँ। शिक्षा उपरान्त सरकारी सेवा के विभिन्न पदों पर कार्य करने का अवसर मिला। इस दौरान आम–जन से जुड़ाव एवं सामाजिक गतिविधियों से जुड़ा रहा। 31 मार्च, 1993 में सरकारी सेवा से सेवानिवृत्ति के बाद सन् 1994 में ग्राम की चौपाल मीटिंग में मुझे ग्राम विकास समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

ग्राम विकास समिति का लगातार कार्य करते–करते मुझे किसान सेवा समिति, चाकसू के अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गयी। इस दौरान मेरा अक्सर मा. शरद जी जोशी से मिलना होता एवं मुद्दों पर चर्चा करते। बढ़ती उम्र में भी उनके व्यक्तित्व से मैं खासा प्रभावित था।

2004 में जन कारवां रैली जो खाद्य सम्प्रभुता को लेकर अमृतसर से नेपाल के लिये प्रस्तावित थी, मुझे भी जाने का अवसर मिला। नेपाल (काठमांडू) से 30 कि.मी. पूर्व माओवादियों ने हमारी तीन बसों को घेरकर हम लोगों को उतारकर दो बसों में आग लगा दी व लाईन में खड़ा कर दिया परन्तु स्थानीय नेपाली आन्दोलनकर्ता फरिश्ता बनकर सामने आया और हमारी असलियत बताई तब हमें छोड़ा गया। हम जीवन– मृत्यु के बीच झूल रहे थे।

जैसे–तैसे हम काठमांडू होटल में पहुँचे, पर हम आश्चर्य चकित रह गये। हमारे से पहले ही श्रीमान् शरद जी जोशी वहां बैठे थे, वे बेहद चिन्ता में डूबे हुये थे। हमें देखते ही वे तुरन्त खड़े हो हम सबकी कुशलक्षेम पूछी व कहा अगर आप लोगों के कुछ हो जाता तो मैं क्या करता! हम एक–दूसरे को ढ़ाढ़स बंधाते रहे। हर सुख–दुख की चिन्ता करते थे जोशी जी। वे नेपाल के प्रधानमन्त्री, भारत के उच्चायुक्त से मिले, पूरी नेपाल सरकार हिल सी गयी। उन्होंने फिर हमें पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था दी।

– मोती सिंह राठौड़

आत्मनिर्भरता का आधार : स्वदेशी – हमारा असली धन

खुशहाली एवं स्वतन्त्रता, स्वावलम्बन (अपने पैरों पर खड़े होना) के माध्यम से ही सम्भव है, परावलम्बन या दूसरे पर निर्भरता से तो गुलामी ही जन्म लेती है, एक राष्ट्र स्वावलम्बन के माध्यम से ही अन्न सम्पन्न और धन सम्पन्न बन सकता है,जब व्यवहार में स्वदेशीपन आ जाये तो स्वराज निश्चित ही स्थापित हो जाता है। स्वदेशी मात्र विचार या अवधारणा नहीं है, यह एक व्यवहारगत प्रणाली है; इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मज़बूत होती है, यह प्रणाली समूची दुनियां की आर्थिकी को सशक्त कर सकती है। स्वराज ही आज के दौर का वसुधैव कुटुम्बकम है, जो पूरी धरती को एक परिवार मानता है।

गांधी जी एक देशभक्त एवं राष्ट्रवादी थे, उन्होंने लिखा मेरी देशभक्ति कोई विशेष चीज नहीं है, मैं ऐसी राष्ट्रभक्ति को अस्वीकार करूंगा, जो दूसरे देश के प्रति बुरी भावना रखती हो, मेरी देशभक्ति तभी तक ठीक है, जब तक उसमें निर्विवादित रूप से मानवता व्याप्त रहेगी। **(यंग इण्डिया 4 अप्रैल 1929)**

गांधी जी का कहना था हम देश में मेहनत कर पैसा कमाये, और उससे विदेशी वस्तुएं खरीदे, यह तो देश के साथ अन्याय

है। इससे देश की मुद्रा का विदेशो में निष्कासन तो होता ही है, देशवासियों की मेहनत व्यर्थ चली जाती है। जब देश के लोगों की खून–पसीने की कमाई विदेशों में चली जायेगी तो भारत की अर्थव्यवस्था खोखला होना स्वाभाविक है, स्वदेशी कोई नफ़रत का पन्थ नहीं है। स्वदेशी अर्थव्यवस्था अपने हाथों के द्वारा एक सृजनशीलता है समुदाय के प्रति प्रेमभाव है, जो धरती के लिये समर्पित होता है। स्वदेशी के आधार पर व्यक्ति गांव व देश आत्मनिर्भर बनते हैं, सम्पन्नता को प्राप्त करते हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था लालच पर आधारित है, जबकि स्वदेशी अर्थव्यवस्था आवश्यकता के आधार पर और साझेदारी पर निर्धारित होती हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों वाली अर्थव्यवस्था अत्यधिक महंगी एवं किसी न किसी से पोषण के आधार पर खड़ी होती है। इस तरह की अर्थव्यवस्थाएं भारत में बी.टी. कपास उत्पादक किसानों को मौत के घाट उतारकर, तो बांग्लादेश की महिला किसानों की कपड़ा फैक्ट्री में होने वाली मौतों पर खड़ी है।

छोटे खेतों के विनाश, कृषक समुदाय के उन्मूलन व विस्थापन, मिट्टी का मरूस्थलीकरण, जैव विविधता का नाश, कारखानों एवं खेतो में पशुओं का नाश, जलवायु असन्तुलन, जनता में बीमारी और महामारी की कीमत पर आज नेस्ले, पेप्सी, वॉलमार्ट, मोन्सेन्टो एवं कारगिल अपने व्यापार को बढ़ा रहे हैं।

मोन्सेन्टो के साथ कार्गिल जैसी कम्पनियाँ डब्लू.टी.ओ. के मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने वाली वे कम्पनियाँ हैं, जो बीजों की गुलामी और भोजन पर डाका डालने का काम कर रही है ये कम्पनियां कई– कई जन–आन्दोलनों व किसान आन्दोलनों के चलते जब मुक्त व्यापार के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति में नाकाम को आधार बनाकर नया मुक्त व्यापार लाने की कोशिश कर रहे हैं। जिसके बल पर वे गैर लोकतान्त्रिक, गैर कानूनी एवं गैर सैद्धान्तिक तरीकों से एक बार फिर भोजन पर डाका डालने को प्रयासरत है। जैसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापार पर एकाधिकार कर उस पर कब्जा करके भारत की देशी अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया था वह व्यापार स्वयं में एक डकैती थी।

हमें उपरोक्त ऐतिहासिक लूट से सबक सीखकर वर्तमान में बदलते कम्पनी राज के मुखौटो से बेखबर नहीं रहना है। हम ऐसे षड़यन्त्रों का स्वदेशी अपनाकर ही बचाव कर सकते हैं, स्वदेशी यानि स्थानीय अर्थव्यवस्था से ही जैविक अर्थव्यवस्था सम्भव है। स्वदेशी कोई कोरा विचार न होकर स्वतन्त्रापूर्वक जीवन जीने का अधिकार है, जो दूसरों को भी सम्मानपूर्वक जीने दो का विचार है।

मानव समाज ने धरती को अब तक बहुत घायल कर दिया है। यही स्थिति बनी रही तो इस धरती से मानव प्रजाति और उसकी संस्कृति निश्चित ही विलुप्त हो जायेगी। देश के नागरिक होने के नाते हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करें और यह सब स्वदेशी की भावना एवं व्यवहारिकता से ही सम्भव है। प्रकृति को संरक्षित करने का अर्थ है, हमारे घरों, परिवारों और हमारी संस्कृतियों का संरक्षण।

मशीनीकरण और मनी मशीन हमारी रचनात्मकता को कम करती है। यह प्रकृति एवं मनुष्यों का पोषण करती है, अपने खेतों में हाथ से काम करना खेत की मिट्टी को अपनी अंगुलियों से सहलाना, कृषि संस्कृति को मज़बूती देती है। हाथों से काम करने पर मनुष्य की तारतम्यता धरती मां से और भी घनिष्ठ हो जाती है। अपना काम अपने हाथों से करना हमें मशीनों की गुलामी जीवाश्म ईंधनों के गिरफ्त से बचाती है।

महात्मा गांधी ने लिखा है, यह विडम्बना है अधिकतर लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं, प्रकृति ने हमें हाथों के रूप में एक अनुपम भेंट दी है। हमें इनका सम्मान करना चाहिये। यदि मशीनों पर हमारी निर्भरता यूं ही बनी रही तो हम अपने हाथों की उपयोगिता को भूल जायेंगे। यह वैश्वीकरण की ही विडम्बना है कि अधिक श्रम वाले लोग अपनी आजीविका को कठिनता से चला रहे हैं, वही प्राकृतिक सम्पदा का दोहन कर व एकाधिकार जमाने वाले, दूसरों की सम्पत्ति हड़पने वाले लोग अरबपति होते जा रहे हैं व भारत में रचनात्मकता और पारिस्थितिक उत्पादन पर तीव्र हमले हो रहे हैं। जबकि गाँधी जी की विरासत और हमारा स्वतन्त्रता आन्दोलन स्वदेशी, स्वसंगठित व स्थानीय अर्थव्यवस्था पर आधारित है। हम इस अर्थव्यवस्था को बीज स्वराज और अन्न स्वराज के माध्यम से समर्थन दे रहे हैं।

आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियां किसान के बीज एवं जीवन को गिरफ्त में लेने, बीजों का पेटेन्ट करने और लोगों पर जी.एम.ओ. थोपकर हम पर अंग्रेजी शासन की तरह ही गुलाम बना रहा है। उस समय गांधी जी ने चरखे को आजादी का प्रतीक बनाकर स्वदेशी का अभियान चलाया व गांधी जी ने किसानों को घाणियां लगाने के लिए प्रेरित किया, चरखे का मतलब 'कपड़ा' यानि कपड़े के प्रति स्वावलम्बन तथा घानी का मतलब रोटी यानि भोजन के प्रति स्वावलम्बन स्वदेशी अर्थव्यवस्था का प्रतीक था। हम अपने मूलभूत अधिकारों की रक्षा करेंगे। बीज स्वराज अन्न स्वराज, जल स्वराज के माध्यम से अपने प्राकृतिक संसाधनों के अधिकारों की रक्षा करेंगे।

हम ज़हरमुक्त, एकाधिकारमुक्त जैविक अर्थव्यवस्था अपनायेंगे, कम्पनीराज़, तानाशाही एवं गुलामी मुक्त, डर, घृणा, द्वेष, विभाजन एवं हिंसामुक्त तथा वसुधैव कुटुम्बकम युक्त जैविक संस्कृति के आधार पर स्वराज व स्वदेशी के माध्यम से जैविक भारत के निर्माण का संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे।

– वन्दना शिवा, प्रख्यात पर्यावरणविद्

विश्व व्यापार संगठन – पृष्ठभूमि

दूसरे विश्वयुद्ध में शामिल देश वही थे, जो युद्ध से पहले उपनिवेशवादी व्यवस्था का लाभ उठाते हुये गरीब और कमजोर देशों में संसाधनों की लूट मचाये हुये थे। दुनिया की 15 प्रतिशत आबादी 85 प्रतिशत संसाधनों का उपभोग कर रही थी। लेकिन सात वर्ष चले युद्ध से न केवल इन देशों में जान–माल का नुकसान हुआ, साथ ही इनकी अर्थव्यवस्था तहस–नहस हो गयी। उनकी कमजोरी का लाभ उठाते हुये अनेक देश आज़ाद हो गये।

इसके बावजूद अमेरिका यूरोपियन आदि देशों ने विकास मिशन के रूप में भूमण्डलीकरण का नया शब्द खोज निकाला, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1994 में अमेरिका व ब्रिटेन की अगुवाई में तीन नई अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन को खड़ा किया। इसके बाद विकास के नाम पर अमेरिका एवं विश्व बैंक की मदद के बतौर विदेशी कम्पनियों की घुसपैठ होने लगी। समुदायिक विकास योजना एवं हरित क्रान्ति परियोजना लागू हुयी तो अमेरिका एवं बाकी देशों को अपने खाद, बीज, कीटनाशक और उपकरणों के साथ हमारे बाजार में घुसने का मौका मिल गया।

1960 व 70 के दशक में अमेरिका भारत सरकार को यह समझाने में कामयाब रहा, कि भारत में विकास के लिये जितनी पूँजी की जरूरत है, वह उपलब्ध नहीं है। इसके लिये उसे विश्व बैंक एवं अन्य स्त्रोतों से ऋण लेना चाहिये व साथ ही पश्चिमी

देशों की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपने यहां उत्पादन की छूट दी तो भारत का निर्यात बढ़ेगा व देश विकास के रास्ते पर बढ़ेगा। इसका परिणाम यह रहा कि भारत पर विदेशी कर्ज का बोझ बढ़ गया। 1990-91 तक देश का विदेशी मुद्रा भण्डार कर्ज का ब्याज चुकाने लायक भी नहीं रहा।

भारत का बाजार तो खुल गया, परन्तु अमेरिका एवं पश्चिमी राष्ट्रों के पास हमारी नीतियों को प्रभावित करने का कोई कानूनी अधिकार नहीं था, इसलिये उन्होंने गेट एवं डब्लू.टी.ओ. जैसी संस्थाओं को खड़ा किया।

गैट (जनरल एग्रीमेन्ट ऑन ट्रेड एण्ड टेरिफ) स्वीटज़रलैण्ड के जेनेवा में 23 देशों के प्रतिनिध 1947 में इस मकसद से साथ एकजुट हुये कि अपने देशों की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिये वैश्विक बाजार का किस प्रकार से इस्तेमाल करें, उन्होंने जनरल एग्रीमेन्ट ऑन ट्रेड एण्ड टेरिफ (गैट) के नाम एक समझौता किया। तय हुआ कि दुनियां के सभी देश व्यापार शुल्क को कम करके अपने बाजार को संरक्षणमुक्त करेंगे।

भारत 8 जुलाई 1948 को गैट का सदस्य बना। 1995 में विश्व के 159 देशों की मीटिंग से विश्व व्यापार संगठन अस्तित्व में आया और हमने उदारीकरण एवं खुली अर्थव्यवस्था की राह पकड़ ली। दो देशों के बीच हर व्यापार सन्धि डब्लू.टी.ओ. के नियमों के आधारित होती है।

विश्व व्यापार संगठन के घोषित लक्ष्य दुनियां के सभी देशों में व्यापार सन्तुलन कायम कर कारोबार के लिये अनुकूल वातावरण बनाना है। इसके लिये नियम बने हैं, इन्हीं नियमों से बंधे समझौते भी होते हैं। विश्व व्यापार संगठन की अपनी एक अदालत है, जिसमें नियमों का उल्लंघन करने वाले देशों के खिलाफ़ मुकदमा दायर किया जा सकता है।

लेकिन डब्लू. टी. ओ. का अघोषित मकसद विकसित एवं ताकतवर देशों के साथ मिलकर विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था पर कब्जा जमाना है। उदाहरणार्थ उसने भारत जैसे विकासशील देशों को खेती एवं खाद्य सुरक्षा पर सब्सिडी कम करने को कहा। असल में डब्लू.टी.ओ. की कोशिश पूरी तरह से सब्सिडी को खत्म करना है ताकि उसके बाद किसान गरीब उपभोक्ता खुले बाजार से खाद्यान्न खरीदने को मजबूर हो।

अब तो किसान भी स्वीकार कर रहे हैं कि खेती एक अविश्वसनीय व्यवसाय बन चुका है। मौसम की मार एवं फसल की बीमारियों के कारण नहीं, बल्कि सरकार की उन नीतियों के कारण जिनका उद्देश्य दरअसल किसान की मदद न होकर बाजार पर कब्जा जमाना है। फसल बीमा से कृषि उत्पादों का व्यापार कम्पनियों को बढ़ावा मिल रहा है। वास्तविक किसान इससे लाभान्वित नहीं हो रहे।

भारत की प्रथम महिला अध्यापिका

नारी मुक्ति आन्दोलन की पहली नेत्री सावित्री बाई फूले का जन्म 3 जनवरी, 1831 में महाराष्ट्र के नाय गाँव नामक छोटे से ग्राम में हुआ था। यह वह काल खण्ड था, जब छुआछूत, भेदभाव, सती प्रथा, बाल-विवाह जैसी सामाजिक बुराईयों में समाज डूबा हुआ था। वंचित वर्ग एवं महिलाओं को शिक्षा निषेध जैसी आम धारणा समाज़ में व्याप्त थी। उन परिस्थितियों में महिला शिक्षा की शुरूआत के रूप में आपने तथाकथित उच्च वर्ग के वर्चस्व को सीधी चुनौति देने का काम किया था।

आपका विवाह महाराष्ट्र के महान् समाज सुधारक विधवा पुनर्विवाह आन्दोलन के तथा स्त्री शिक्षा समानता के अगुआ महात्मा ज्योति बा फूले के साथ हुआ। शादी के बाद महात्मा फूले ने अपने खेत में आम के वृक्ष के नीचे विद्यालय शुरू किया, यही स्त्री शिक्षा की सबसे बड़ी प्रयोगशाला भी थी। जिसमें उनके दूर के रिश्ते की विधवा बुआ सगुणा बाई क्षीर सागर व सावित्री बाई विद्यार्थी थी। उन्होंने खेत की मिट्टी में टहनियों की कलम बनाकर शिक्षा लेना प्रारम्भ किया। दोनों ने मराठी में उत्तम ज्ञान प्राप्त कर लिया।

उन दिनों पुणे में मिशेल नामक एक ब्रिटिश मिशनरी महिला नॉर्मल स्कूल चलाती थी। ज्योति बा ने सगुणा एवं ज्योति बा को तीसरी में दाखिला करवा दिया। पढ़ाई के साथ उन्होंने अध्यापन कार्य प्रशिक्षण लिया, फ़िर शुरू हुआ एक अभूतपूर्व विद्रोह मुट्ठीभर शोषक लोगों ने समाज़ को गुमराह कर महिला एवं वंचित वर्ग को शिक्षा से वंचित रख धार्मिक शिक्षा के ज़रिये आर्थिक–राजनैतिक–धार्मिक) एकाधिकार कायम कर रखा था। फूले दम्पत्ति इस एकाधिकार को तोड़ना चाहते थे।

इसलिये उन्होंने 1 जनवरी, 1848 को पूणे में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की। सावित्री बाई फूले इसी विद्यालय में शिक्षिका बनकर आधुनिक भारत की पहली अध्यापिका बनने का गौरव हासिल किया। इस विद्यालय की सफ़लता से उत्साहित होकर फूले दम्पत्ति ने 15 मई, 1848 को पूणे के वंचित वर्ग की बस्ती के अस्पृश्य लड़के–लड़कियों के लिये भारत के इतिहास में पहली बार विद्यालय की स्थापना की। थोड़े ही अन्तराल में इन्होंने पूर्ण के आस–पास ग्रामों में 18 स्कूल गरीब बस्तियों में स्थापित कर दिये।

तथाकथित उच्च वर्ग के ठेकेदारों ने महिला एवं वंचित वर्ग को शिक्षा देने के फूले दम्पत्ति के निःस्वार्थ एवं ईश्वरीय कार्य के खिलाफ़ जबरदस्त अभियान चलाया। सावित्री बाई फूले जब स्कूल के लिये निकलती तो वे लोग गोबर, पत्थर फेंकते, भद्दी–भद्दी गालियाँ देते, पर सावित्री बाई फूले न विचलित हुई, न लक्ष्य से डिगी। बल्कि वह दौगुने जोश व संकल्प के साथ अनवरत सेवा के इस महान् कार्य के लिये सतत् साधना से जुटी रही।

पूणे के धर्माधिकारियों का विरोध इतना प्रबल था कि उनके पिताजी ने कहा या तो स्कूलें चलाओ या मेरा घर छोड दो। फूले दम्पत्ति ने इस महान् कार्य हेतु घर छोड दिया। उस समय इस निराश्रित दम्पत्ति को पनाह दी उस्मान शेख ने–

भारत में वंचित व स्त्री शिक्षा का आरम्भ करके फूले दम्पत्ति ने एक नये युग की नींव रखी। दोनों मिलकर 24 सितम्बर, 1873 को सत्यशोधक समाज़ की स्थापना की। इस संस्था ने स्त्री व गरीब वर्ग शिक्षा के साथ समाज सुधार (छुआछूत–भेदभाव, बाल विवाह) के कार्यों में ऐतिहासिक योगदान दिया। महात्मा ज्योति बा फूले की मृत्यु सन् 1890 में हुई। तब सावित्री बाई ने सत्यशोधक समाज के ज़रिये उनके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाया। सावित्री बाई फूले की मृत्यु 10 मार्च 1897 को प्लेग मरीज़ों की देखभाल करने के दौरान हुई।

किसान सम्मेलन – शीतला

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में 4 मार्च 2019 को सिकोईडिकोन परिसर, शीतला (चाकसू) में आयोजित किया गया।

सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिन्तक एवं समाजसेवी मा. एस. एन. सुब्बाराव की गरिमामयी उपस्थिति, मुख्य वक्ता के रूप में रही। परिचय सत्र में वक्ताओं ने बताया मा. सुब्बाराव वैसे भी परिचय के मोहताज़ नहीं है। अपना सम्पूर्ण जीवन समाज कार्य में युवाओं को रचनात्मक कार्यों की प्रेरणा देकर पूज्य गांधी के दिखाये मार्ग पर चलने को प्रेरित करते रहे है।

70 के दशक में आपने चम्बल के 654 डाकुओं को अपने उद्‌बोधनों एवं गीतों से आत्मसमर्पण करवा राष्ट्र व समाज की मुख्यधारा में शामिल किया। आपको अनेक अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

4 जिलों से आये किसान प्रतिनिधियों, युवा प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए मा. सुब्बाराव जी ने हर ग्राम को एक आदर्श ग्राम बनाने का आह्‌वान किया, इसके लिये उन्होंने पूज्य गांधी एवं अन्ना हजारे के ग्राम निर्माण का उदाहरण देते हुए बताया, ग्राम व्यसन मुक्त, सामाजिक समरसता एवं सदभाव युक्त, जल संचय की प्रवृति बढ़ाने, युवाओं में योग–आसन–व्यायाम के प्रति आकर्षण बढ़ाने से व्यक्ति निर्माण कार्य सतत चलता रहे। साथ ही उन्होंने आये सम्भागियों के अनुशासन की प्रशंसा करते हुये, किसान सेवा समिति द्वारा समय–समय पर उठाये गये मुद्दों – पर कहा– इनसे समुदाय को लाभ हुआ है एवं सरकारों को अपनी नीतियां एवं निर्णय बदलने को मज़बूर होना पड़ रहा है, पर सन्तोष व्यक्त किया व उसे प्रभावी माना।

इस अवसर पर उन्होंने परम सम्माननीय शरद जी जोशी के प्रखर व्यक्तित्व का स्मरण करते हुये कहा ऐसे किसान, महिला, युवा संगठन बनाना उन जैसे लोगों के द्वारा ही सम्भव था, उन्होंने इस कारवां/ संगठनों को उत्तरोत्तर बढ़ने लिये पूज्य गांधी के मार्ग पर चलने का आह्‌वान किया।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री अशोक माथुर ने अपने उद्‌बोधन में कहा जब सभी के खून का रंग लाल होता है तो फिर सम्प्रदाय, जाति के नाम पर कैसा खून–खराबा। उन्होंने खेती–किसानों की समस्याओं व समाधान का गहराई से विवेचन किया।

नेहरू युवा केन्द्र के हनुमान सहाय शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार क्षिप्रा माथुर, सिकोईडिकोन निदेशक मनीष सिंह ने भी किसान सम्मेलन को सम्बोधित किया।

उस सादगी की प्रतिमूर्ति मा. सुब्बाराव के उद्‌बोधन के बाद सभी किसान एवं युवा प्रतिनिधियों में एक ऊर्जा का संचार हुआ एवं गांधी जी मार्ग पर चलकर रचनात्मक कार्य करने की दिशा एवं राह का स्पष्ट सन्देश मिला।

पंचम नदी महोत्सव

किसान सेवा समिति महासंघ का प्रतिनिधि मण्डल बान्द्राभान, जिला होशंगाबाद (म.प्र.) में आयेजित हुए पंचम नदी महोत्सव में सहभागी रहा। इस कार्यक्रम के प्रेरणास्त्रोत नर्मदा समग्र के संस्थापक स्व. माननीय अनिल माधव दवे (पूर्व पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री, भारत सरकार) द्वारा नदी संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण के दिखाये मार्ग पर चलने का पंचम सौपान था एक संकल्प था।

इस महोत्सव में देश के विभिन्न राज्यों से आये पर्यावरणविदों, कृषि विशेषज्ञों, ज़ल, ज़मीन, जंग़ल के संरक्षण एवं संवर्धन में लगे जन संगठनों के प्रतिनिधियों का अद्‌भुत संगम था। इस नदी महोत्सव के चिन्तन व मन्थन का विषय सहायक नदियों का परिवेश के अन्तर्गत चार समानान्तर सत्र चले, जिसमें सिकोईडिकोन संस्था के सचिव श्री शरद जोशी जी की सक्रिय भागीदारी रही व सत्रों के संचालन व विषयों में संस्था के विज़न–मिशन की स्पष्ट छाप दिखाई दे रही थी।

समानान्तर सत्र –

1. नदी किनारे की संस्कृति एवं समाज़।
2. नदी, कृषि एवं आज़ीविका का परस्पर सम्बन्ध।
3. नदी का अस्तित्व और जैव़–विविधता।
4. सहायक नदियों का संरक्षण– नीतियाँ – नियम एवं सम्भावनाऐं।

उक्त मुद्दों पर प्रभावी रणनीतिक चर्चा कर पर्यावरण रक्षा की दिशा में अधिक ऊर्जा के साथ अपना सख़्त कार्य करते रहेंगे। कार्यक्रम में प्रतिनिधि मण्डल के साथ गये राज़स्थान लोकनृत्य कलाकार अपनी पारम्परिक वेशभूषा में महोत्सव के दौरान लोकनृत्यों से राज़स्थानी संस्कृति ज़ीवन्त कर रहे थे। कार्यक्रम में पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द जी, केन्द्रीय मंत्री नितिन गड़करी, उमा भारती, नरेन्द्र सिंह तोमर, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय श्री सुरेश सोनी, विधानसभा अध्यक्ष श्री सिया शरण शर्मा की गरिमा मय उपस्थिति रही।

दो दिवसीय कार्यक्रम के मन्थन में शासन, पर्यावरण प्रेमी पूज्य सन्तों एवं राज़नेताओं ने भी प्रतिभागियों के साथ सीधा संवाद कर सरकार द्वारा नर्मदा संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के लिये किये जा रहे प्रयासों को साझा किया। महोत्सव में गहन विचार–विमर्श एवं विभिन्न सत्रों के प्रजेन्टेशन एवं आपसी संवाद से जो सीख निकलकर आई वह है समाज़ एवं राष्ट्र के प्रति दायित्व बोध। यह समाज़ एवं राष्ट्र मेरा है, प्रकृति मेरी माँ है, प्रकृति के साहचर्य में ज़ीने की ललक एवं भावना बने। शासन में बैठे नेताओं ने भी बेहिचक स्वीकार किया कि बिना (ज़न समुदाय) समाज़ के सहयोग से ज़ल, ज़मीन, ज़ंगल बचाने की कल्पना बेमानी है।

सहमति बनी; सभी प्रतिभागी अपने–अपने कार्यक्षेत्र में ज़ल, ज़मीन, जंग़ल बचाने की प्रेरणा एवं संकल्प के साथ आगामी रूपरेखा तैयार करेंगे व सरकार के साथ उक्त मुद्दों पर व्यवहारिक एवं प्रभावी रणनीतिक चर्चा कर नदी एवं पर्यावरण संरक्षण के अपने ध्येय पथ पर सतत् कार्य करेंगे। प्रतिनिधि मण्डल के साथ गये राज़स्थानी लोकनृत्य कलाकार अपनी पारम्परिक वेशभूषा में महोत्सव के दौरान लोकनृत्य प्रस्तुत कर राज़स्थानी संस्कृति को जीवन्त कर रहे थे।

सभी वक्ताओं ने उक्त मुद्दों पर अपने उद्‌बोधन में सरकारों द्वारा प्रकृति व नदी संरक्षण की जानकारी देते हुये जन समुदाय के साथ जन–अभियान चलाने का संकल्प दोहराया।

शख्सियत

सामाजिक बदलाव के लिए संघर्ष

श्री राधेश्याम माधीवाल का जन्म 20.6.1961 को जयसिंहपुरा गांव के नट समुदाय के गरीब परिवार में हुआ इनकी माता का नाम श्रीमति हच्छन देवी व पिता का नाम सुरजमल नट है। राधेश्याम जी 6 भाई एवं एक बहिन सहित कुल 7 बहिन भाईयों में सबसे बडे है। पिता का मुख्य व्यवसाय खेती एवं मजदुरी था क्योंकि इनके पिता के पास केवल 5 बीघा जमीन थी तो परिवार का पालन–पोषण करने के लिए पिता जी खेती के साथ–साथ मजदुरी भी करते थे।

राधेश्याम जी की माताजी नासीरदा से थी अत: जब राधेश्याम जी 6 – 7 वर्ष के थे तब ही इनकी माताजी ने इनको पढाई के लिए नासीरदा भेज दिया अत इनकी शुरुआती पढाई लिखाई अपने ननिहाल नासीरदा में हुई और उसके बाद परिवार की माली हालत ठीक नहीं होते हुये भी इन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी एवं राजस्थान कॉलेज से 1984 में स्नातक किया। इसके बाद इन्होंने घर की जिम्मेदारी लेनी पड़ी और इन्होंने अपने आगे की पढ़ाई छोड़कर अपने छोटे भाईयों एवं बहिन को पढ़ाने की जिम्मेदारी ली एवं सभी भाईयों एवं बहिन को पढ़ाया वर्तमान में तीन भाई सरकारी सेवा में कार्यरत है।

राधेश्याम जी का जीवन संघर्ष से भरा रहा क्योंकि पढ़ाई–लिखाई करने के बाद सरकारी नौकरी नहीं लगी एवं परिवार की जिम्मेदारी आ गई तब इन्होंने इधर–उधर के काम किया लेकिन उन काम से इनको सन्तुष्टि नहीं मिली और इनकी इच्छा समाज में व्याप्त देह व्यापार की परम्परा से बालिकाओं को बाहर निकालना था लेकिन वो इतना आसान नहीं था क्योंकि जब परिवार की आमदनी को कोई दूसरा रास्ता हो तब यह सम्भव हो सकता है। देह व्यापार से राधेश्याम जी को शुरु से ही घृणा थी ओर यह सीख इनको इनकी माता जी श्रीमति हच्छन देवी से मिली क्योकि गरीबी हालात में भी इनकी माताजी ने सब भाई बहिनों को पढ़ाया एवं अपनी बेटी को नट समुदाय की परम्परा के विरुद्व जाकर उसकी शादी की। इसी सीख के आधार पर राधेश्याम जी समाज में व्याप्त कुरुति को मिटाने के लिए अपने प्रयास शुरु किया ।

राधेश्याम जी अपना पहला चुनाव वार्ड पंच का 1990 में लड़ा एवं वार्ड पंच बने इसके बाद सन् 2000 में धौली ग्राम पंचायत में सरपंच पद हेतु एससी सीट आरक्षित हुई तो इन्होंने सरपंच का चुनाव लड़ा एवं उसमें विजय हुये। इसके बाद इन्होंने समाज में सुधार करने के लिए नट समाज के प्रमुख व्यक्ति से मिल कर समाज के सुधार के लिए आगे आने का आह्वान किया और 2001 में अखिल राजस्थान नट समाज समिति का गठन किया एवं और तहसील स्तर पर समाज की बैठकें करना शुरु किया, शुरुआत में तो समाज के लोग बैठकों में आकर समाज सुधार की बात करने लगे, जब बच्चियों को देह व्यापार नहीं करवाकर शादी की बात करने लगे तो लोगों ने धीरे–धीरे साथ देना बन्द कर दिया एवं बैठकों मे विवाद होने लगा कि शादी करना हमारी परम्परा के विरुद्ध है और खाप पंचायतों से जुडे पंचो ने अपना विरोध करना शुरु कर दिया, परिणाम स्वरूप समिति सफल न हो पाई। लेकिन इसके बावजूद भी राधेश्याम जी अपना प्रयास जारी रखा, और अब तक नट समाज की 23 बालिकाओं की शादी अपने प्रयास से करवा पाये है।

राधेश्याम के 5 बच्चे हैं जिनमे तीन लड़के राहुल, रोहन, रमन है एवं दो बेटियां रजना व रसना है इन्होंने अपने पाँचो बच्चों को अच्छा पढ़ाया–लिखाया जिसमें से दो बच्चे सरकारी सेवा में एक अध्यापक है व दूसरा पुलिस में है, एक अपनी पढ़ाई कर रहा है। अपनी दोनों बेटियों की शादी नट समाज में की एवं उनमें से बड़ी बेटी रजना सवाईजयसिंहपुरा ग्राम पंचायत की वर्तमान सरपंच है।

फरवरी 2019 में दूसरे नम्बर के बेटे रोहन की शादी के लिए समाज की लड़की जो वर्तमान में कस्टम में सरकारी सेवा में है उससे सगाई की तो पूरा नट समाज राधेश्याम जी के खिलाफ हो गया एवं इस लड़की से अपने बेटे की शादी नहीं करने के लिए दबाव बनाने लगे क्योंकि उनका कहना था कि यह शादी हमारे समाज की परम्परा के खिलाफ है। खाप पंचायत की बैठके हुयी ओर राधेश्याम जी को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। तब भी राधेश्यामजी समाज के आगे नही झुके एवं खाप पंचायत के नेताओं व राधेश्याम जी के बीच लड़ाई–झगड़ा–मारपीट तक हुआ लेकिन वो अपने निर्णय पर अडिग रहे ओर अपने बेटे की शादी एक पढी–लिखी लड़की से की जिससे पूरा नट समाज इस शादी में नही आया एवं गांव में यदि कोई कार्यक्रम हो उसमें वो राधेश्याम जी को नहीं बुलाते है। राधेश्याम जी का मानना है कि हम लोकतंत्र में जी रहे हैं एवं पढे–लिखे बच्चे हैं तो शादी अपनी पसंद से ही करेंगे, मैं समाज की परम्परा के अनुसार अपने बच्चों का भविष्य खराब नहीं कर सकता। साथ ही राधेश्याम जी का कहना है कि हमारे समाज में कई लोगों के पास बहुत पैसा है लेकिन बच्चियों से देह व्यापार करवाने के कारण हमारे समाज की इज्जत नहीं है।

राधेश्याम जी ने बताया की आज हमारे समाज में बहुत सी बालिकाऐं होनहार है, वो पढ़ाई में अव्वल है 80 से 90 प्रतिशत तक अंक लेकर आती है ओर वे चाहती है कि मैं पढ़–लिखकर अपना नाम कमाऊ देश के विकास में अपना योगदान दूं। लेकिन हमारे समाज के पुरुषों की मानसिकता ऐसी है कि वो अपने समाज की परम्परा का बहाना लेकर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं दे पाते, जबकि मेरा मानना है कि जो बालिकाऐं पढ़–लिख कर दुसरे तरीकों से अच्छा पैसा कमा सकती है, और सम्मान से गरिमा मय जीवन जी सकती है उन बालिकाओं को आगे बढ़ाने हेतु मदद करनी चाहिए। और उन बालिकाओं को समाज की अंधविश्वासी परम्पराओं से बाहर निकालकर एक अच्छा नागरिक बनाने में अपना जितना भी योगदान हो सके करना चाहिऐ।

सिकोईडिकोन के साथ राधेश्याम जी माधीवाल का जुडाव 2000 मे जब वो सरपंच बने तब से ही था लेकिन जब जुलाई 2018 मे रक्षण परियोजना की जयसिंहपुरा में शुरुआत की तो संस्था की हर गतिविधि में उनका सराहनीय योगदान रहा। समाज की बुराई पर वो खुलकर बात करते है।

अन्न देवता की, जनता के नाम पुकार

6000 हजार बच्चे, भारत में रोज कुपोषण के शिकार होते है।

जब से सृष्टि पर मानव जीव की उत्पति हुई, उसी समय से मै मानव की जठरागनी (भूख) को शांत करने का काम करता आ रहा हूँ। मुझे लोग सम्मान व श्रद्वा से अन्न देवता के नाम से जानते है। मानव सभ्यता जब अस्तित्व में आई, लोग नदियों के किनारे रह कर कबीलों में रहने लगे, कई सभ्यताओं का विकास व पतन हुआ, देश दुनियां में प्लेग, महामारी, छपन्या का अकाल भी पड़ा, जब लोग अन्न देवता के दर्शन के लिए तड़पने लगे थे, लोग अन्न के बिना देश दुनियां में लाखों की तादात में लोग मृत्यु के गाल में समा गये थे, अर्न्तराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर विश्व युद्व लडे गये कबीलों के बाद में हुण, कुषाण, द्रविड, मुगल, अंग्रेज आकर चले गये लेकिन मेरा महत्व पाषाण काल से लेकर आधुनिक काल तक किसी प्रकार से कम नहीं हुआ।

मै गरीब, अमीर, महिला, पुरूष, रंग–भेद, जाति वर्ग धर्म, क्षेत्र बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए समान रूप से उपयोगी

रहा हूँ। लाचार, गरीब लोग मुझे अन्न देवता के नाम से मेरे नाम की भीख मांग कर अपनी भूख को दूर करते आये हैं तथा मेरा सम्मान करने वाले लोग अन्न का दान देकर अपने आप को बहुत गौरवशाली महसूस करते हैं। क्योंकि धार्मिक आस्था में विश्वास रखने वाले लोग व धर्म ग्रन्थों में अन्न के दान की महिमा की गई है। अन्न के दान को सबसे बडा दान बताया गया है। वेदो में भी मेरे बारे में लिखा है **'' अन्न ही ब्रह्मा है''**

एक कहावत यह भी है कि राजा कर्ण प्रात:काल उठ कर सवा मण स्वर्ण का दान करते थे। लेकिन जब उसको इस बात का अहसास हुआ कि स्वर्ण का दान सबसे बडा दान नहीं है, बल्कि अन्न का दान सबसे बडा है, तो राजा कर्ण को अन्न का दान करने के लिए भूमि पर पुर्नजन्म लेना पड़ा ऐसी कहावत है। इस कहावत में कितना दम है या नही लेकिन मैं इस कहावत के माध्यम से यह बताना चाहता हूँ कि अन्न का दान सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है।

मेरा मानना है कि 21 वीं शताब्दी में प्रवेश के समय से ही मुझे कई प्रकार से अपमानित किया जाने लगा है, आज का भिखारी भी अनाज, आटा नहीं लेकर नगद पैसे लेना पंसद करता है ताकि शाम को मधुशाला में जाकर दिनभर की थकान दूर कर सके। कुछ लोग आज भी मुझे आदर व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, लेकिन ऐसे लोग बहुत कम है, जिनको अंगुलियों पर गिना जा सकता है। क्योंकि आधुनिकता के युग में ग्लोबलाईजेशन के कारण मेरे बारे में लोगों की गलत धारणा बनती जा रही है, शायद अधिकांश लोगों की यह धारणा बन गई है कि अब अन्न की आवश्यकता नहीं है। अन्न का मतलब अर्थात मुझे पहचान तो रहे है ना आप? क्योंकि लोग पिज्ञा, बर्गर, इडली, चाउमीन, मैगी, मूमोज, आदि पर निर्भर होते जा रहे हैं लेकिन वो यह भूल कर रहे है कि यह भोजन भी मेरे द्वारा से ही बने हुये है जिसमें मैं पूर्ण रूप से समायोजित होता हूँ जिसका परिचय आप चटकारे के रूप में लेते है। मेरा रूप व नाम समय के अनुसार बदल गया लेकिन किसी न किसी रूप में मै वहां उपस्थित हूँ।

मेरा अपमान इस कदर होने लगा है कि यह चतुर मनुष्य विभिन्न समारोह के सामाजिक आयोजनों पर विशाल महल नुमा भव्य पांडालों, फाईव-स्टार होटलों में खाने का आयोजन करते हैं। इन आयोजनों में अपने इष्ट मित्रों, भाई-बन्धुओं, सगे सबंधियों, नाते रिश्तेदारों, यारे-प्यारो, आस-पड़ौस वालों को बडे सम्मान के साथ भोज पर आमंत्रित करते हैं। जहां पर सैल्फ सर्विस (बफर सिस्टम) खड़ा खाने की व्यवस्था होती है। ऐसे आयोजनों में चाह कर भी कोई भी महिला व पुरूष बैठ कर खाना खाना पंसद नही करता क्योंकि, बैठ कर खाना खाना आयोजन की व्यवस्था व संस्कृति के खिलाफ है वह बैठ कर खाना खाने वाला अपने आप को शर्मिन्दा महसूस करता है। इसलिए वह परेशान होकर भी खडा होकर ही भोजन प्राप्त करना चाहता है। उस भोजन को लगे हुये काउन्टर पर से प्राप्त करने के लिए वरिष्ठ नागरिक, महिलाऐं, बच्चे उस भीड में अपने आप को असहाय, लाचार नजर आते हैं। मै मूक दर्शक होकर उन लाचार लोगों को देखता रहता हूँ, उनकी पीड़ा समझता हूँ लेकिन कुछ बोल नहीं पाता, यह मेरी विवशता है। उस भव्य आयोजन में कुछ लोग मेरा लुफ्त लेने के बाद में, मुझे कचरा पात्र के हवाले कर देते हैं क्या यह बुद्धिमता का परिचय है जबकि कुछ लोग मुझे पाने के लिए तरसते है।

सबसे ज्यादा अन्न की बर्बादी सामाजिक आयोजनों में होती है। एक सर्वेका दावा है कि अकेले बेंगलुरू में एक साल में होने वाली शादियों में 943 टन पका हुआ खाना फेंक दिया जाता है। हर साल 670 लाख टन खाना बर्बाद कर देते हैं। हर साल दुनिया में 1300 करोड क्विंटल खाना बर्बाद हो जाता है। एक और चौंकाने वाला आंकडे पर गौर करें तो जो भोजन हमारे देश में बर्बाद होता है उसे उत्पन्न करने में 230 क्यूसेक पानी लगता है। इस पानी से 10 करोड लोगों की प्यास बुझाई जा सकती है।

खाद्यान्न बर्बादी में हम दुनियां में 7 वें नम्बर पर है। 50,000 करोड रूपये का खाद्यान्न हर साल भंडारण के अभाव में नष्ट हो जाता है। यह देश के कुल खाद्यान्न का 40 प्रतिशत है। 6000 हजार बच्चे भारत में रोज कुपोषण के शिकार होते हैं। भारत में हर साल 23 करोड टन दाल, 12 करोड टन फल और 21 करोड टन सब्जियां खराब हो जाती है। केन्द्र के मुताबिक ब्रिटेन के सालाना अनाज उत्पादन के बराबर का अनाज हम बर्बाद कर देते हैं।

इस ग्लोबालईजेशन के जमाने में मेरी कोई सुनने वाला नही है फिर भी मैं अपनी पीडा जरूर बया करूंगा कि कुछ लोग मंहगी थालियों में मेरे से (अन्न) से बने पकवानों की झूठन छोड़कर कचरा पात्र में डाल देते हैं। उस झूठन का इंतजार करने वाले गरीब बच्चे सुबह उगते सूरज के साथ उस कचरा पात्र में से अपनी भूख को शांत करने के लिए झगड़ते देखे जा सकते है। भारत में 5 वर्ष से कम उम्र के करीब 10 लाख बच्चें हर वर्ष कुपोषण के कारण मर जाते हैं, इसका मुख्य कारण भोजन का कुप्रबन्धन है। क्या इन भव्य समारोह का आयोजन करने वाले, उन कुपोषण से मरने वाला देश का भविष्य (5 वर्ष से कम उम्र के बच्चें) को सुरक्षित नही कर सकते।

साथियों यह मेरी पीडा यही समाप्त नहीं होती, लेकिन मानव सभ्यता के नाम, मैं इस बात का संकेत आवश्य देना चाहता हूँ कि अगर आपने मेरा महत्व नहीं समझा तो इस दुनियां से मैं लुप्त हो जाऊंगा और फिर मेरे दर्शन संग्रहालय में ही होंगे, जो आने वाली पीढियां यह देखेगी की अन्न कैसा होता है?

(चन्दा लाल बैरवा)
राज्य समन्वयक
दलित अधिकार केन्द्र, जयपुर, राजस्थान।

सेवा भावना

एक बालक तीन–चार दिन तक घर नहीं लौटा तो कई व्यक्ति उसे खोजने के लिये इधर–उधर दौड़े। सभी ने सम्भावित स्थान पर तलाश की पर बालक का कुछ पता नहीं चला, सभी हताश एवं असीम चिन्ता मग्न हो गये। बेचारी मां अपने बालक के खो जाने की आशंका से बिलख–बिलख कर रो रही थी कि अचानक व्याकुल माता की आंखों को किसी ने अपने नन्हें हाथों से बन्द किया। माता आंखे बन्द करने वाले को स्पर्श से पहचान गयी और अपनी गोद में खींच कर वात्सल्य व उलाहना भाव से पूछा– चार दिन से कहाँ था बेटा?

बालक ने मुस्कराते हुए कहा– माँ यही पास के एक गाँव में हैजा फैल गया था, रोगियों की सहायता की आवश्यकता थी इसलिये इतने दिन उनकी सेवा में लगा रहा और आपको सूचना देने का समय ही नहीं मिला। मां ने बालक की सेवा भावना को सराहते हुये कहा, शाबास मेरे बेटे, तुमको पुत्र रूप में पाकर मैं गौरवान्वित हूँ।

यह पुत्र आगे चलकर भारत माता के वीर सपूत, महान स्वतन्त्रता सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस बने।

मेरी कलम पूजती जग पालनहार किसान को

कोई पूजे ओमकार कोई पूज रहा गौतम भगवान।
कोई पूजे महावीर कोई पूजे नानक देव महान।।
कोई पूजे देवी–देवता और खण्डित पाषाण को।
मेरी कलम पूजती जग पालन हार किसान को।।

ज्येष्ठ दुपहरी, शीत माघ में नंगे बदन रहा करता।
श्रावण श्याम मेघ का टपका छपरी तले सहा करता।।
धोती फटी सी लटी यह काया आदर्शों का शुभ दर्शन।
प्यार असीम धरा का उर में, उज्ज्वल नीर बहा करता।।
जिसकी क्षमता सदा चनौती झेले हर तूफान को।
मेरी कलम पूजती .....

जिस़का ज़ीवन कुरूक्षेत्र स्वयं नित पढ़े कर्म की गीता है।
पावन अन्तस में शान्ति सुधा की भागीरथी पुनिता है।।
जिसके छू लेने से ही माँटी कुन्दन बन जाती।
अमृत वैभव को बॉट स्वयं निर्धन बन आंसू पीता है।।
अभिनन्दन हम करें कर्मयोगी द्वापर सम्मान को।
मेरी कलम पूजती .....

जिस़के चरणों में है भविष्य – हाथों में देश का भाग्य लिये।
श्रम की पूजा करें, सदा होकर गृहस्थ वैराग्य लिये।।
धरती की सज्जा सेवा ही नित, जिसके जीवन का श्रृंगार ।
भावी भारत के भव्य चित्र की निर्मिती का सौभाग्य लिये।।
राजनीति ने लूटा देश की संस्कृति को पहचान करें।
मेरी कलम पूजती .....

वर्ण भेद को मिटा राष्ट्र कृषक को जगाना ही होगा।
श्रोणित स्वेद बहा श्रम से सामर्थ्य जुटाना ही होगा।।
बच्चा–बच्चा बने भगत सिंह बोये स्वाभिमानी खेती।
अन्नपूर्णा वसुधा को जग सम्मान दिलाना ही होगा।।
कृषकों के श्रम के दलाल अब खुद पहुचें शमशान को।
मेरी कलम पूजती .....

–महेश चौधरी

शीर्ष संस्थाओं का संस्थागत विकास पर क्षमतावर्धन

समुदाय आधारित संगठनों की आवश्यकताओं को देखते हुये उन्हें स्वतन्त्र निर्णय, सम्भावित नेताओं की पहचान, नेतृत्व क्षमतावर्धन, संचार एवं दस्तावेजीकरण जैसे विषयों पर क्षमतावर्धन की निरन्तर आवश्यकता रहती है। इसी सन्दर्भ में समुदाय आधारित संगठनों की मज़बूती एवं सतत्ता पर 21–22 जनवरी, 2019 को सिकोईडिकोन परिसर, शीतला (चाकसू) में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी।

प्रशिक्षण का मूल ध्येय किसान सेवा समिति महासंघ, महिला संगठन एवं युवा मंच आदि संगठनों की विकास में भागीदारी बढ़ाना तथा निर्धन एवं वंचित वर्ग की सतत् आजीविका एवं खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चितता व सशक्तीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना रहा है।

कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुये सिकोईडिकोन सचिव माननीया मन्जू बाला जोशी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में ग्राम स्तर पर चौपाल एवं ग्राम विकास समितियों को मज़बूत करने के सुझावों को रेखांकित करते हुये कहा हमारे एजेन्डे में समाज का आखिरी व्यक्ति का सामाजिक–आर्थिक विकास प्राथमिकता में हो। साथ ही किसान सेवा समिति महासंघ एवं किसान सेवा समितियों को भी गुणवत्तापूर्ण II लाईन अप के साथ बदलते परिवेश में अपने कार्य को कैसे आगे अनवरत करते रहे।

इस पर मुद्दों व समयानुसार रणनीति सभी मिल तैयार करें। उन्होंने अन्य किसान संगठनों से वैचारिक समन्वय व तालमेल बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा हम कहाँ सशक्त हैं? कहाँ खामियां हैं चिन्तन करें; किसान, महिला, युवा, वंचित वर्ग की आवाज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँची है। उन्होंने आगाह किया कि राज्यस्तर के मुद्दों पर अपनी पकड़ ढ़ीली नहीं हो, ऐसा सतत् प्रयासरत रहे।

संस्था के निदेशक श्री मनीष सिंह ने वर्तमान सन्दर्भ में संगठनों की प्रासंगिकता पर अपने उद्बोधन में कहा कि संगठनों के एक मूल्य होते हैं, एक विचारधारा होती है, जिस पर चलकर संगठन लक्ष्य प्राप्ति करता है एवं सरकारों को उसके किये गये वादों पर जवाबदेह एवं संवेदनशील बनाता है। संगठन सभी समुदायों को साथ लेकर आगे चलते हैं। चाहे अमीर–गरीब हो, स्त्री–पुरूष हो किसी भी वर्ग का हो। हमारा संगठन कैसा है, समाज में कैसी भूमिका निभाता है व राजनीति संगठन के कार्यों पर कैसे असर डालती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में संस्था की भूमिका को देखते हुए हमारी समझ स्पष्ट होनी चाहिये।

श्री आलोक व्यास ने संस्था की चुनौतियों पर सम्भागियों के साथ ग्रुप डिस्कशन द्वारा जो मुद्दे उभरकर आये उसमें महिलाओं, वंचित वर्ग व युवाओं की संगठन में सक्रिय भागीदारी हो, दस्तावेजीकरण व्यवस्थित हो व संस्था के विज़न–मिशन की समझ हो व लक्ष्य तय कर आगे बढ़े। लोगों को अधिकारों के साथ दायित्वों का भी बोध हो।

श्री कविता मिश्रा ने भी इस कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुये बताया ऐसी कार्यशालाओं से सम्भागियों की विभिन्न मुद्दों पर व्यापक समझ बढ़ाने के साथ सांगठनिक ढ़ाँचे की मजबूती पर आत्म मन्थन होता है व आगे कार्य करने की दिशा तय होने में सुविधा रहती है।

इस प्रकार इस कार्यशाला में सम्भागियों की विभिन्न मुद्दों पर सीख व समझ बढ़ी। साथ ही सम्भागियों ने ही अपने–अपने स्तर पर विभिन्न बिन्दुओं पर गहन विचार करने का अवसर मिला व व्यवहारिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ने की दिशा तय करने का लाभ मिलेगा।

धन्यवाद महासंघ अध्यक्ष श्री मोती सिंह राठौड़ एवं सचिव श्री भगवान सहाय दाधीच ने ज्ञापित किया।

किसान सेवा समिति शाहबाद के सार्थक प्रयास

बारां जिले का शाहबाद ब्लॉक की ग्राम पंचायत बीची, ढ़िकवानी, सनवाड़ा, बमनगवाँ, आगर में सामाजिक दृष्टि से वंचित समुदायों के लोग रहते हैं। इनमें दलित, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति (सहरिया, भील), भूमिहीन लोग, छोटे एवं सीमान्त किसान कृषि कार्य एवं श्रमिक कार्य करते हैं, इनमें से अधिकांश गरीबी रेखा के नीचे वाले परिवार है। इन ग्राम पंचायतों के ग्राम सांधरी कॉलोनी, धुवां, रातईकला, बैंहटा, लेदरा आदि में विगत अक्टूबर, 2018 से स्थानीय राशन डीलरों द्वारा राशन सामग्री वितरण में अनियमितताएं की जा रही थी, तब किसान सेवा समिति शाहबाद ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली में आ रही समस्या समाधान हेतु विशेष अभियान चलाया, यह मुद्दा आम जन की खाद्य सुरक्षा से जुड़ा था।

सर्वप्रथम यह उपरोक्त ग्रामों में ग्राम विकास समितियों द्वारा गांवो में चौपाल बैठकों का आयोजन करने पर खाद्य सुरक्षा का मुद्दा उभरकर आया। चौपाल व ग्राम विकास समिति की मासिक बैठक में रखा। इस समस्या को समझने एवं तथ्य इकट्ठे करने हेतु किसान सेवा समिति के पदाधिकारी उक्त गांवो में पहुंचे व चौपाल में जानकारी हासिल की।

दिनांक 16.02.2019 को किसान सेवा समिति की आम सभा आयोजन कर मुख्य अतिथि के तौर पर स्थानीय विधायक महोदया श्रीमती निर्मला जी सहरिया को आमन्त्रित किया व इस बैठक में समस्त शाहबाद ब्लॉक की सार्वजनिक वितरण प्रणाली में आ रही समस्याओं पर ग्राम वाईज़ श्रेणीबद्ध कर किसान सेवा समिति शाहबाद की ओर से ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि पिछले 4 वर्षों से इस क्षेत्र में किसान फसल खराबा एवं अकाल से ग्रसित है, इस पर P.D.S. की अनियमितता से हम ज्यादा परेशान है। विधायक महोदया जी ने समस्या समाधान का आश्वासन दिया।

परन्तु किसान सेवा समिति के प्रयास इस सम्बन्ध में अनवरत जारी रहे। 25.02.2019 को समिति ने अपने प्रयासों से P.D.S. गेहूँ से वंचित लोगों को सिकोईडिकोन परिसर बुलाया, वहाँ से किसान सेवा समिति के अध्यक्ष मथुरा लाल सहरिया व महासंघ प्रतिनिधि भोगी लाल सहरिया सहित सैंकड़ो किसान उपखण्ड अधिकारी कार्यालय शाहबाद पहुंचे एवं मा. उपखण्ड अधिकारी महोदय को मा. मुख्यमन्त्री महोदय, राजस्थान सरकार के नाम ज्ञापन सौंपा, जिसमें P.D.S. से वंचित सभी लोगों के नाम एवं राशन कार्ड संख्या अंकित थे, ऐसे कुल 168 व्यक्ति थे।

उपखण्ड अधिकारी महोदय ने डी.एस.ओ. बारां से बात की एवं सभी राशन डीलरों को 27.02.2019 को बैठक बुला चेतावनी दी। परिणाम यह रहा अनियमितता करने वाले राशन डीलरों ने लेदरा–धुवा में दो माह पीछे की व लेदरा में एक माह पीछे की राशन सामग्री वितरित की व जल्दी ही बकाया गेहूँ मिलना शुरू हो गया है, जिससे ग्रामों में संगठन के द्वारा संगठित होकर किये जा रहे मुद्दों की पहल पर विश्वास एवं समझ बढ़ी है। पर इस पूरी प्रक्रिया में जो चुनोतियां उभरकर आयी वे है:–

1. राशन डीलर राजनैतिक प्रभावी होना।
2. लाभार्थी आर्थिक रूप से कमजोर होना।
3. आवागमन के संसाधनों की कमी।

किसान को आत्मनिर्भर बनाने को प्रयासरत कृषि विज्ञान केन्द्र

कृषि विज्ञान केन्द्र, अन्ता–बारां :

बारां जिले में प्रथम पंक्ति प्रसार के रूप में कृषि विज्ञान केन्द्र, अन्ता की स्थापना 1995 में हुई। कृषि विज्ञान केन्द्र जिले में कृषि विकास हेतु किसानों, महिलाओं, बेरोजगार युवकों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं तक नवीनतम तकनीकियों के हस्तानान्तरण हेतु कार्य कर रहा है। इसके लिए केन्द्र पर तथा गांवों में व्यवसायिक/उद्यमिता आधारित प्रशिक्षण, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, किसानों के खेत पर परीक्षण, प्रसार गतिविधियाँ जैसे किसान मेला, प्रक्षेत्र दिवस, प्रशिक्षण शिविर, कृषक भ्रमण इत्यादि का आयोजन केन्द्र द्वारा समय–समय पर किया जाता है। केन्द्र का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय की भौगोलिक परिस्थिति, फसल पद्धति, समस्या एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कृषि एवं कृषि से संबंधित व्यवसायों की उत्पादकता बढ़ाना, रोजगार के अवसर प्रदान करना एवं किसानों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में सुधार लाना है।

बारां जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 7 लाख हैक्टेयर तथा जनसंख्या 12.5 लाख है। राजस्थान के कृषि जलवायु जोन –5 में आने वाले बारां जिले की औसत वार्शिक वर्शा 748 मि.मी. है। पार्वती, कालीसिंध व परवन नदियां जिले की मुख्य स्त्रोत है। खरीफ में सोयाबीन, उड़द, धान तथा रबी में गेहूँ, सरसों, चना व लहसुन यहां की मुख्य फसले हैं। लहसुन के बढ़ते क्षेत्रफल व पैदावार को देखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र अंता पर वर्श 2015–2016 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत लहसुन उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य लहसुन उत्पादन तकनीक, सूक्ष्म सिंचाई, पोषक तत्व प्रबंधन तथा मूल्य संवर्धन तकनीकों में सुधार हेतु कार्य करना है।

राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (एन.एच.आर.डी.एफ.)

राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान की स्थापना नेफेड एवं प्याज निर्यातकों द्वारा सन् 1977 में दिल्ली में की गई। प्रतिष्ठान का मुख्य कार्य लहसुन, प्याज व अन्य बागवानी फसलों पर अनुसंधान व नवीनतम तकनीकी का प्रसार है। किसानों के हित के लिए एन.एच.आर.डी.एफ. विभिन्न राष्ट्रीय संस्थाओं से मिलकर कार्य कर रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य प्याज तथा अन्य ऐसी ही निर्यात योग्य बागवानी फसलों की पैदावार तथा गुणवत्ता बढ़ाना है। विगत 41 वर्षों से इस संस्था ने प्याज की 5 व लहसुन की 10 किस्में विकसित कर एवं अन्य बागवानी फसलों के विकास में अद्भुत योगदान दिया है तथा इस क्षेत्र में राष्ट्र की एक अग्रणी संस्था बनकर उभरी है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

रामकृष्ण जयदयाल डालमिया सेवा संस्थान

किसान सेवा समिति महासंघ

आज़ादी के उपरान्त देश में विभिन्न संगठन अलग–अलग वर्गों के मुद्दों को लेकर किसान, गरीब व वंचितों की आवाज उठा रहे हैं। इसी क्रम में किसानों व गरीबों की आवाज को उठाने के लिए राज्य में अलग–अलग संगठनों में किसान सेवा समिति कार्य कर रही है। किसानों व वंचितों के मुद्दों की राज्य–स्तर पर आवाज़ को मज़बूत करने के लिए 2004 में किसान सेवा समिति महासंघ का गठन हुआ जो सतत् रूप से किसानों, गरीबों, वंचितों, महिलाओं व दलितों की आवाज़ को मज़बूत कर रही है।

महासंघ केवल जड़स्तर के मुद्दों को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर ले जाता है अपितु राज्य व राष्ट्र स्तर पर नीतियों को जड़स्तर तक पहुंचान व मुख्य रूप से क्रियान्वित हेतु कार्य करती है।

परिचय :-

किसान सेवा समिति महासंघ राज्य स्तरीय जन संगठन है– जो किसानों, महिलाओं, दलित, आदिवासी एवं वंचित वर्ग के सामाजिक–आर्थिक विकास एवं इनके हितों से जुड़े मुद्दों व अधिकारों की क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पैरवी करना है। जो विशुद्ध गैर राजनीति जन आन्दोलन पर आधारित है। महासंघ का प्रमुख कार्य राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दों को प्रकाश में लाना व उन पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाना है। समान विचारधारा वाले संगठनों को संगठित करने के साथ–साथ उसमें राष्ट्रीय बोध, समतामूलक, शोषण मुक्त समाज की रचना आदि नीतियों के प्रति सहमति बनाना भी महासंघ का लक्ष्य है। हम मूल्य आधारित ऐसी शक्ति हासिल करना चाहते हैं कि सरकारों को ऐसी नीतियों को बदलने को मजबूर करने की क्षमता हासिल कर सके जो जनहित की न हो। स्थानीय ब्लॉक एवं जिला स्तर पर संगठनों एवं समुदाय प्रतिनिधियों की जागरूकता एवं क्षमता वृद्धि करना ताकि वे सामुदायिक अधिकारों को वास्तविक रूप से लागू करने एवं सुनिश्चित करने में स्थानीय सुशासन प्रक्रिया, पंचायत राज एवं जन–आन्दोलनों के साथ सहज़ता से जुड़े रहे। ऐसे मुद्दों पर प्राथमिकता रहेगी, जो आमजन से जुड़े हुए हों, विशेषतः प्रयास– दलित, वंचित, महिला, बच्चे व किसान से जुड़े होंगे।

वर्तमान समय के कार्य :-

जलवायु परिवर्तन, शिक्षा की विसंगतियों एवं समानीकरण, महंगाई, राहत कार्य सर्वे, जैव परिवर्धित एवं जैव विविधता, अकाल, चारा–पानी, सार्वजनिक वितरण, असंगठित मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिले इस सन्दर्भ में महिला उत्पीड़न, भू–अधिकार, नरेगा, घुम्मकड़ जातियों के हितों पर, राज्य बजट पर, स्वास्थ्य।

भावी योजनाः- राज्य स्तरीय संगठन के प्रतिनिधि राज्य के सभी जिलों से जुड़े हों तथा हम एकजुट होकर राज्यस्तरीय प्रयासों को ज्यादा गति दो पायें।

प्राथमिकताएं :-

जलवायु परिवर्तन ,राज्य की स्थायी अकाल एवं जलनीति बनवाना व प्रभावी क्रियान्वयन करवाने का सतत प्रयास। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ समुदायों तक पहुँचाना सुनिश्चित करना। पंचायतों को उनके अधिकार दिलवाना। खाद्य सुरक्षा की बिल की अनुपालन करना। शिक्षा के अधिकार बिल की सही अनुपालना।

महिलाओं व दलितों के अधिकारों को दिलवाना। भू–अधिकार से वंचितों को अपना अधिकार दिलवाना। साझा समझ वाली संस्थाओं से नेटवर्किंग

सीख :- जीवन वास्तव में अनवरत सीखने एवं विकास करने की प्रक्रिया है, सीखने की प्रक्रिया प्रभावी एवं उपयोगी हों, अतः प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने साथ–साथ उस समाज की ताकत एवं कमज़ोरियों से परिचित हो जिसका वह अंग है।

किसान सेवा समिति महासंघ

स्वराज कैम्पस, एफ-159-160, सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर-302022 (राज.)

टेलीफोन : 0141-2771488, 7414038811/22/33 फैक्स : 0141-2770330

UNIQUE PRINT IN • 9414363099